अन्तिम भावना

(आर्यिका सुपार्श्वमती जी द्वारा संगृहित)

भावना (1)

दिन रात तेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ,
देहांत के समय में तुम को न भूल जाऊँ ।टेक।।

शत्रु अगर कोई हो, सन्तुष्ट उनको कर दूँ,
समता का भाव धर कर, सबसे क्षमा कराऊँ । दिन रात...

त्यागूँ आहार पानी, औषध विचार अवसर,
टूटे न नियम कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ । दिन रात...

जागे नहीं कषायें, नहीं वेदना सताये,
तुमसे ही लो लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ । दिन रात...

आत्मा स्वरूप अथवा, आराधना विचारन,
अरिहन्त सिद्ध साधु, रटना यहीं लगाऊँ । दिन रात...

धरमात्मा निकट हो चरचा धरम सुनावें,
वह सावधान रक्खें गाफिल न होने पाऊँ । दिन रात...

जीने की हो न वांछा, मरने की हो न इच्छा,
परिवार मित्र जन से, मैं ममत्व को हटाऊँ । दिन रात...

भोगे जो भोग पहिले, उनका न होवे सुमरन,
मैं राज्य सम्पदा व पद इन्द्र का न चाहूँ। दिन रात...

रत्नत्रय का पालन, हो अन्त में समाधि,
तन से ममत्व हटाकर, तन छोड़ यहाँ ही जाऊँ । दिन रात...

भावना (2)

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले,
हो सिद्ध सिद्ध मुख में जब प्राण तन से निकले।

सम्मेद शिखर का थल ही तीर्थंकरों का स्थल हो,
वहां ध्यान मेरा अटल हो, जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

नेमी प्रभु का वट हो, सिर सोहता मुकुट हो,
वैराग्य अति प्रकट हो जब, प्राण तन से निकले। इतना तो...

चम्पापुरी का वन हो, जहां वासुपूज्य चरण हो,
उनके चरणों में मन हो जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

कैलाश पावापुरी हो गिरनार सोनागिर हो,
सबके चरण में शिर हो जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

णमोकार मन्त्र मुख हो, जिनवाणी का भी सुख हो,
फिर नेक भी ना दुख हो, जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

जब प्राण कण्ठ आवे, कोई रोग न सतावे,
प्रभु दर्श को दिखावे जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

सम्यकत्व ज्ञान चारित इन युक्त आत्मा हो,
मिथ्यात्व छूट जावे जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

मेरा ज्ञान में ही मन हो, मेरी ध्यान में लगन हो,
हो मैल कुछ ना दिल में जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

समता सुधा को पीकर छोड़ूं मैं राग द्वेष,
मन शील से रंगा हो जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

इच्छा क्षुधा की होवे जो चाह उस घड़ी में,
उनको भी त्याग कर दूं जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

हे नाथ अर्ज करता विनती पर ध्यान दीजै,
होवे समाधि पूरी जब प्राण तन से निकले। इतना तो...

जब प्राण तन से निकले, सोहं सोहं हो मुख में,
जब प्राण तन से निकले, अरहंत सिद्ध हो मुख में।
जब प्राण तन से निकले।।

भावना (3)

प्रभुवीर ये विनय हैं, जब प्राण तन से निकले,
तुम नाम जपते जपते, ये प्राण तन से निकले ॥१॥

माता पितादि जितने ये हैं कुटुम्ब सारे,
उनसे ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकले ॥२॥

परिग्रह का जाल मुझ पर फैला हुआ हैं स्वामी,
उनसे ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकले ॥३॥

ये क्रोध मान, माया और लोभ जो बताया,
चारों कषायें छूटे, जब प्राण तन से निकले ॥४॥

आधि व्याधि उपाधि तज कर करूं समाधि,
ऐसी दशा हो भगवन, जब प्राण तन से निकले ॥५॥

मांगितुगी मुक्तागिरी हो, गजपंथा शुद्ध थल हो,
कुंथलगिरी का वन हो जब प्राण तन से निकले ॥६॥

शत्रुंजय में मन हो, पावागिरी की लगन हो,
चित्त प्रभु में मगन हो, जब प्राण तन से निकले ॥७॥

गुरुराज पद निकट हो, यति राजगण प्रगट हो,
जिन बिम्ब दर्श होवे जब प्राण तन से निकले ॥८॥

जावें ना मोक्षमन्दर तब तक रहे दिगम्बर,
होवे सफल मनोरथ, जब प्राण तन से निकले ॥९॥